दयानन्द जी ने उनके निधन पर कहा था कि आज संसार से व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया। दृष्टि-हीन होने के बाबजूद उनमें अपार आत्मविश्वास, स्वाभिमान तथा आन्तरिक-शक्ति विद्यमान थी। वे अपने सभी कार्य नेत्रवानों के समान ही कर लिया करते थे। कहीं आते-जाते या सीढ़ियाँ आदि चढ़ते-उतरते किसी की सहायता नहीं लिया करते थे। एक बार अपने शिष्य प्रेमसुख के साथ कहीं जा रहे थे। मार्ग में नहर थी। प्रेमसुख ने सावधान किया तो नाराज हो गए और बिना प्रेमसुख की सहायता के कई बार नहर के आर-पार जाकर उसे चकित कर दिया। एक पात्र से दूसरे पात्र मे जल डालते समय एक बून्द भी बाहर न गिरने देते थे। एक बार मथुरा के स्वर्णकार नयनसुख को दण्डी जी ने विभिन्न रत्नों की परख के विषय में उपदेश दिया तो उनकी रत्नपरीक्षा में अद्‌भुत दक्षता देखकर नयनसुख विस्मित रह गया था। एक बार इन्हीं नयनसुख जड़िया को दण्डी जी ने शतरंज में स्वयं चालें चलबा कर केदारनाथ खत्री से विजय दिलवाई थी। उस समय उन्होनें शतरंज के आठ प्रकारों की चर्चा की थी। खेल को समाप्ति की ओर ले जाते हुए दण्डी जी ने कहा-अब तक हम दोनों की 171 चालें हुई है। मैं अब 172 वीं चाल चलता हूँ। दण्डी जी ने घोड़े की किश्त दिलाई। केदारनाथ ने बाई ओर हाथी के पास बादशाह को हटा लिया। तब दण्डी जी कहने लगे-किश्त ऊँट की भी लग सकती है, परन्तु वजीर की शय दो और कह दो मात। जड़िया जी अभी वजीर को छुने ही लगे थे कि केदारनाथ अपने बादशाह की हालत पर हैरान हो गए और बोले-क्या खूब करामाती मात है।

एक बार दिल्ली के प्रसिद्ध पण्डित हरिश्चन्द्र ने उनकी पाठशाला में अचानक प्रवेश किया तथा स्वामी जी के पूछने पर असत्य कह दिया कि